6

प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम
सृजनात्मक अभिव्यक्ति तथा सौंदर्यानुभूति का विकास

पद्मा यादव

सभी बच्चों में सृजनात्मक क्षमता होती है, यद्यपि उसकी श्रेणी में अंतर हो सकता है। सृजनात्मकता और बुद्धिमत्ता एक नहीं है। हो सकता है कि कुशाग्र बुद्धि वाले व्यक्ति में उतनी सृजनात्मक क्षमता न हो। सृजनात्मकता शून्य में नहीं पनपती। बच्चों को जितना ज्ञान और अनुभव दिया जाएगा अपने सृजनात्मक प्रयासों के लिए उन्हें उतनी ही सुदृढ़ नींव मिलेगी। अत: एक प्रेरक वातावरण बच्चे की सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है। स्वतंत्र खेलों, विशेष रूप से नाटकीय और रचनात्मक खेलों के अवसर बच्चों की सृजनात्मकता का पोषण करते हैं। घर या शाला का कठोर अनुशासनपूर्ण वातावरण, जो एकरूपता पर विशेष बल देता है, बच्चों की सृजनात्मकता को बाधा पहुँचा सकता है। प्रस्तुत लेख में पूर्व प्राथमिक स्तर पर सृजनात्मक अभिव्यक्ति तथा सौंदर्यबोध के विकास के लिए शिक्षकों हेतु कुछ गतिविधियाँ सुझाई गयी हैं, जिनके प्रयोग से बच्चों में सृजनात्मक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।

तीन से छ: वर्ष की आयु के बीच के बच्चे पूर्व प्राथमिक शालाओं में पूर्व प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करते हैं। ये शालाएँ बच्चों को प्रेरणादायक खेल वातावरण प्रदान करती हैं, जिसमें बच्चों का बौद्धिक, भाषागत, सामाजिक, संवेगात्मक तथा शारीरिक विकास होता है। साथ ही पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों को औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करती है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा बच्चों का शारीरिक विकास होता है, बच्चों को पढ़ने-लिखने तथा गणित की तैयारी में मदद मिलती है। यह बच्चों को औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करती है साथ ही बच्चों में कई अन्य सृजनात्मक क्षमताओं को भी विकसित करती है।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्यबोध

'सृजनात्मकता' प्रत्येक बच्चे में प्राकृतिक गुण के समान विद्यमान रहता है। सृजनात्मकता एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसमें नए विचारों का जन्म होता है जिसमें मौलिकता एवं समसामयिक दोनों होते हैं। सृजनात्मक लोग जिज्ञासु होते हैं। जिज्ञासा ही रचनात्मकता और

* *प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

ज्ञान का बीज होती है। सृजनात्मकता आसानी से नज़र आ जाती है। किंतु इसकी अभिव्यक्ति हेतु विशेष वातावरण की आवश्यकता होती है। शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति हेतु ऐसे वातावरण का निर्माण करें, जिसमें उनके चिंतन एवं उनकी सक्रियता को बढ़ावा मिले, जहाँ उन्हें अपनी कल्पनाओं को मूर्त रूप देने के अवसर मिले तथा वे अनेक प्रकार की प्रतिक्रियाएँ व्यक्त कर सकें। शिक्षक कक्षा में निम्नलिखित गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास कर सकते हैं।

- कला के द्वारा सृजनात्मक अभिव्यक्ति— ऐसी क्रियाएँ करना जैसे कि चित्रकला एवं रंग भरना, छापना, फाड़ना, काटना और चिपकाना, कोलाज का काम, मिट्टी का काम, कागज़ मोड़ना इत्यादि।
- लय और ताल संगीत की गतिविधियाँ— शब्दों और संगीत के प्रतिक्रियास्वरूप बच्चों के मन में जो भावनाएँ उठती हैं उन्हें वे अपनी शारीरिक गतिविधियों तथा भंगिमाओं आदि से व्यक्त करते हैं। उन्हें ऐसे अवसर दें कि लय/ताल के माध्यम से बच्चे स्वतंत्रतापूर्वक शारीरिक गतिविधियाँ तथा भंगिमाएँ व्यक्त कर सकें। जैसे —
  - — संकेत गान एवं उंगलियों के खेल
  - — लयात्मक गतिविधि— ढपली या ड्रम की ताल पर शिक्षिका लय उत्पन्न करें और तेज़ या धीमी करती जाए। बच्चे अपने शरीर के अंगों से विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ करें जैसे चुटकी बजाना, ताली बजाना, पैर थपथपाना आदि। जैसे कि लय हो। अपने नेता का अनुसरण करें जैसे खेल भी बच्चों के शरीर में लचीलापन लाते हैं और उन्हें गति करने में आसानी होती है।
- सृजनात्मक नाटक— विभिन्न प्रकार की लय और गति वाला संगीता बजाएँ। बच्चों से कहें वे धुन पर जिस प्रकार चाहें अपने शरीर को हिलाएँ। बच्चों को कोई निर्देश या संकेत दें जिससे उनके मन में कोई दृश्य चित्र उपस्थित हो जाए जैसे — एक

तीन साल से चार साल की उम्र के बच्चे द्वारा बनाया गया परिवार का चित्र

चिड़ियाघर का चित्र

हाथी जंगल में घूम रहा है या एक तितली एक फूल से दूसरे फूल पर घूम रही है आदि। उनसे कहें कि हाथी की तरह घूमो, तितली की तरह पंख फैला कर उड़ो इत्यादि।

— बच्चों को स्वयं कहानी बनाने दें और अभिनय के अवसर प्रदान करें।

— मूक अभिनय (डम्ब शराड) जैसे खेल बच्चों के साथ खेले जा सकते हैं। बच्चों को अर्द्धगोले में बिठा दें। शिक्षिका खेल शुरू कर सकती हैं। वह हाथ में कोई वस्तु जैसे — पेंसिल लें और उसे कोई अन्य वस्तु मानते हुए अभिनय करें, उदाहरण के लिए, दातुन करने का अभिनय। बच्चों को पहचानना होगा कि वह कौन सी वस्तु की क्रिया कर रही है। अगली बारी किसी और बच्चे की हो। फिर शिक्षिका उसी पेंसिल को कोई अन्य वस्तु मानकर अभिनय कर सकती हैं जैसे — हथौड़ी मानकर कील ठोकने का अभिनय इत्यादि। हर बार बच्चों को उस काल्पनिक वस्तु का नाम बताना होगा।

- सृजनात्मक चिंतन— ऐसे प्रश्न पूछें जिनके कई संभावित उत्तर हो सकते हैं उनके प्रवाह के साथ अपनी कल्पना का प्रयोग करते हुए उत्तर दे सकें। जैसे —

— स्वतंत्र खेल 'विशेष रूप से नाटकीय या काल्पनिक खेल' तथा रचनात्मक खेल सृजनात्मकता को बढ़ावा देते हैं।

— कई उत्तर वाले प्रश्न— बच्चों से ऐसे प्रश्न पूछें जो उनकी कल्पना को जागृत करें और जिनका केवल एक ही सही उत्तर न हो। उदाहरण के लिए,

(क) *क्या हो यदि*

— तुम्हें पंख मिल जाएँ और तुम उड़ सको?

— तुम्हारी कक्षा में कोई कुत्ता आ जाए?

— तुम अपने पिता जी से लंबे हो जाओ?

(ख) *तुम क्या करोगे यदि —*

— तुम्हारा खाने का डिब्बा अलमारी के ऊपर रखा हो और तुम्हें भूख लगी हो?

— तुम्हारा दूध/चाय बहुत गर्म हो और उसे जल्दी ठंडा करना चाहो?

— तुम्हें कोई चित्र बनाना हो और तुम्हारे पास रंग हो पर ब्रश न हो ?

(ग) *तुम निम्नलिखित वस्तुओं का कितने प्रकार से प्रयोग कर सकते हो?*

— छतरी

— कागज़ का पन्ना

— बाल्टी

— स्टूल

— रस्सी

— बच्चों के साथ कहानी बनाना— बच्चों को अर्द्धगोले में बिठा दें। उन्हें संकेत देने वाला कोई वाक्य दें जैसे 'एक जंगल में एक शेर रहता था..।' अर्द्धगोले के किनारे पर बैठा बच्चा अगला वाक्य देकर कहानी को आगे बढ़ाए। इसी प्रकार क्रम तब तक चलता रहेगा जब तक कहानी पूरी न हो जाए। शिक्षिका को कहानी में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। यदि बच्चे कथावस्तु से हटने

लगें तो शिक्षिका चतुराई से उन्हें सही रास्ते पर ले आएँ अन्यथा बच्चों को स्वतंत्रता रहनी चाहिए कि वे अपनी इच्छानुसार कहानी बनाएँ।

— बच्चों के साथ तुकबंदियाँ तैयार करना। बच्चों को सरल तुकबंदियाँ बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इस कार्य में शिक्षिका को उनकी सहायता करनी चाहिए।

- सौंदर्यनुभूति का विकास— अपने आस-पास के पर्यावरण में उपलब्ध सौंदर्य और रंगों के प्रति बच्चों को संवेदनशील बनाने की कोशिश करना चाहिए। बच्चों में सौंदर्यानुभूति विकसित करने के लिए निम्नलिखित गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं। जैसे —

— पर्यावरण में जो कुछ भी उपलब्ध हो उसकी सहायता से कक्षा को कलात्मक और सुंदर ढंग से सजाएँ।

— कक्षा में प्रदर्शन की वस्तुएँ आकर्षक और प्रासंगिक हो तथा इतनी ऊँचाई पर टंगी या रखी हों कि बच्चों की दृष्टि उन पर पड़ती रहे। प्रदर्शन की वस्तुओं में जब भी संभव हो परिवर्तन करते रहें। प्रत्येक नए प्रोजेक्ट को लेने पर यह परिवर्तन करना उपयुक्त होगा।

— बच्चों को भ्रमण के लिए तथा प्राकृतिक सौंदर्य वाले स्थानों पर अवश्य ले जाएँ और चारों ओर के प्राकृतिक सौंदर्य की ओर उनका ध्यान आकृष्ट करें।

— आसपास के पर्यावरण में बच्चों को जो कुछ भी अच्छा लगे उसकी चर्चा करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति तथा सौंदर्य की अनुभूति

शिक्षिका की भूमिका

बच्चों की कल्पना का संसार बहुत ही व्यापक होता है। अतः शिक्षिका का संवेदनशील होना बहुत आवश्यक है, साथ ही बच्चों की कल्पना, नवाचार क्षमता तथा उनकी सहभागिता को बढ़ाने के लिए उसे एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करना चाहिए। एक शिक्षिका को प्रत्येक बच्चे पर पूरा विश्वास हो तथा उसे ज्ञात हो कि प्रत्येक बच्चा सृजनात्मक है। यथा —

- बच्चों में व्यक्तिगत भिन्नता होती है उसे समझें और उसका आदर करें।
- बच्चों को अपने विचार और भावनाओं को स्वेच्छापूर्वक व्यक्त करने दें।
- बच्चों को वस्तुओं को देखने तथा उन पर प्रयोग करने, जिज्ञासु होने तथा प्रश्न करने के लिए प्रेरित करें।
- बच्चों को समय और स्वतंत्रता दें कि वे सोचें और स्वयं चुनाव करें यह तभी संभव होगा जब आप स्वतंत्र और निर्देशित खेलों में संतुलन बनाए रखेंगे।
- बच्चों को विविध प्रकार के अनुभव दें जिसके आधार पर उनकी सृजनात्मकता फल-फूल सके।
- बच्चों को ऐसी खेल सामग्री दें जिनका कई प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है।
- हर बच्चे के प्रयास की सराहना करें, चाहे उसमें सुधार की बहुत अधिक संभावना हो।
- बच्चों को कला और अभिव्यक्तियों की नकल करने के लिए प्रोत्साहित न करें। बच्चों को बने बनाए नमूने कट-आउट्स आदि यथासंभव न दें,

जिसकी वे केवल नकल कर लें। इससे बच्चों की सृजनात्मक क्षमता कुंठित हो जाएगी।

- बच्चों की बनायी हुई कलात्मक वस्तुओं में सुधार करें उन्हें फिर से उनके सामने बना दें पर यह हमेशा याद रखें कि वे अपने अनुभवों को अपने ढंग से व्यक्त करते हैं।
- सत्तावादी वातावरण निर्मित न करें जिसमें आपके द्वारा निश्चित ढाँचे और नियम-कानून पर बहुत अधिक ज़ोर दिया जाए।

निष्कर्ष

सृजनात्मकता की सहज अभिव्यक्ति हेतु एक मुक्त वातावरण का होना अत्यावश्यक है। ऐसे वातावरण में बच्चे को छानबीन करने की, वस्तुओं से खेलने की, कुछ बनाने की और यहाँ तक कि कुछ नष्ट करने की भी स्वतंत्रता होनी चाहिए। सृजनात्मकता के विकास में खेल एक महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है। शिक्षक कक्षा में उपरोक्त सुझावों को प्रयोग में लाकर इस प्रकार के वातावरण का निर्माण कर सकते हैं।

संदर्भ

कौल, विनीता. 1996. *प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम*. एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली.

गुप्त, मंजीत सेन. 2013. *प्रारंभिक बाल्यावस्था — देख-भाल और शिक्षा*. पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड., दिल्ली.

प्रसाद, देवी. 2005. *शिक्षा का वाहन कला*. नेशनल बुक ट्रस्ट., दिल्ली.